Hartalika Teej Vrat Katha | हरतालिका तीज व्रत की सम्पूर्ण कथा

यह **Hartalika Teej Vrat Katha** स्वयं भगवान शिव ने माता पार्वती को सुनाई थी, जिसमें उन्होंने पार्वती जी को उनके पूर्व जन्म की तपस्या और इस व्रत के माहात्म्य का स्मरण कराया था।

🌿 कथा का प्रारम्भ — पार्वती जी की घोर तपस्या

एक बार भगवान शिव ने देवी पार्वती से कहा —

"हे गौरी! पर्वतराज हिमालय पर स्थित गंगा के पावन तट पर, बाल्यावस्था में तुमने बारह वर्षों तक अधोमुखी होकर घोर तपस्या की थी।"

उस कठोर तपस्या का विवरण इस प्रकार था —

- **माघ मास की कड़कड़ाती शीत** में पार्वती जी ने निरंतर जल में खड़े होकर तप किया।
- **वैशाख की जलाने वाली गर्मी** में उन्होंने पंचाग्नि (पाँच अग्नियों के बीच) से अपने शरीर को तपाया।
- **श्रावण मास की मूसलाधार वर्षा** में वे खुले आसमान के नीचे अन्न-जल का त्याग करके तप में लीन रहीं।
- बारह वर्षों तक उन्होंने अन्न नहीं खाया — केवल पेड़ों के सूखे पत्ते चबाकर जीवन निर्वाह किया।

🌿 नारद जी का आगमन और विवाह का प्रस्ताव

पार्वती जी की इस कठोर तपस्या को देखकर उनके पिता **पर्वतराज हिमालय** अत्यंत दुखी रहते थे। उनकी पुत्री की यह दशा उनसे देखी नहीं जाती थी।

एक दिन देवर्षि **नारद जी** पर्वतराज के घर पधारे। उन्होंने कहा —

"गिरिराज! मैं भगवान विष्णु के संदेशवाहक के रूप में आया हूँ। आपकी पुत्री की तपस्या से प्रसन्न होकर स्वयं भगवान विष्णु आपकी सुपुत्री से विवाह करना चाहते हैं।"

यह सुनकर पर्वतराज हिमालय प्रसन्न हो गए और उन्होंने इस विवाह प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

🌿 पार्वती जी का संकट और सखी की सूझबूझ

जब यह बात पार्वती जी के कानों तक पहुँची तो वे अत्यंत दुखी हो गईं। उनकी एक **प्रिय सखी** ने उनकी व्याकुलता का कारण पूछा। तब पार्वती जी ने कहा —

"सखी! मैंने अपने हृदय से भगवान शिवशंकर को पति के रूप में स्वीकार किया है। परंतु मेरे पिता ने मेरा विवाह भगवान विष्णु से निश्चित कर दिया है। मेरे लिए अब प्राण त्यागने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं बचा।"

सखी ने धैर्य और समझदारी से कहा —

"सखी, प्राण त्यागने की क्या आवश्यकता है? जिसे एक बार हृदय से पति मान लिया, उसी से जीवनपर्यंत निर्वाह करना स्त्री धर्म है। मैं तुम्हें घनघोर वन में एक ऐसी गुफा में ले जाऊँगी जहाँ तुम्हारे पिता तुम्हें खोज न सकें। वहाँ तुम अपनी साधना में लीन हो जाओ — ईश्वर अवश्य सहायता करेंगे।"

🌿 वन में तपस्या और शिव की प्रसन्नता

सखी की बात मानकर पार्वती जी उसके साथ घनघोर वन में चली गईं। वहाँ एक नदी के तट पर एक पवित्र गुफा में उन्होंने आराधना प्रारम्भ की।

भाद्रपद शुक्ल तृतीया को हस्त नक्षत्र था। उस शुभ तिथि को पार्वती जी ने **रेत से शिवलिंग** का निर्माण किया और पूरे विधि-विधान से भगवान शिव की पूजा की। रात भर वे शिव की स्तुति के गीत गाती रहीं और जागरण किया।

उनकी इस कठोर तपस्या का प्रभाव इतना तीव्र था कि **भगवान शिव का आसन डोलने लगा**। उनकी समाधि भंग हो गई और वे तत्काल पार्वती जी के समक्ष प्रकट हुए। उन्होंने प्रसन्न होकर कहा —

"हे देवी! तुम्हारी तपस्या से मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ। माँगो — क्या वर माँगती हो?"

पार्वती जी ने विनम्रता से कहा —

"प्रभु! मैंने हृदय से आपको अपना पति स्वीकार किया है। यदि आप सचमुच प्रसन्न हैं तो मुझे अपनी अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार कर लीजिए।"

भगवान शिव ने **"तथास्तु"** कहकर यह वर प्रदान किया और कैलाश पर्वत पर वापस चले गए।

🌿 प्रातःकाल और पारणा

प्रातःकाल होते ही पार्वती जी ने पूजन की समस्त सामग्री नदी में प्रवाहित की और सखी के साथ व्रत का **पारणा** किया। तभी उनके पिता पर्वतराज हिमालय उन्हें खोजते हुए वहाँ पहुँचे। पुत्री की दशा देखकर उनकी आँखों में आँसू आ गए।

पार्वती जी ने पिता को अपनी तपस्या का उद्देश्य बताया और कहा —

"पिताजी! मैंने इस कठोर तपस्या से भगवान महादेव को प्रसन्न किया है। अब आप मेरा विवाह केवल महादेव जी से करें — यही मेरी शर्त है।"

पर्वतराज मान गए। कुछ काल पश्चात शास्त्रोक्त विधि-विधानपूर्वक **भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह संपन्न हुआ।**

🌿 कथा का समापन — भगवान शिव के वचन

भगवान शिव ने इस **Teej Vrat Katha** का उपसंहार करते हुए पार्वती जी से कहा —

"हे पार्वती! भाद्रपद शुक्ल तृतीया को तुमने जो व्रत किया था, उसी के फलस्वरूप हमारा विवाह हो सका। जो कुंआरी कन्याएँ इस व्रत को पूर्ण एकनिष्ठा और आस्था से करती हैं, उन्हें मनोवांछित वर की प्राप्ति होती है। और जो सुहागिन स्त्रियाँ यह व्रत करती हैं, उनका सौभाग्य अखंड रहता है।"

Hartalika Teej Vrat Vidhi | हरतालिका तीज व्रत विधि

Hartalika Teej Vrat Vidhi के अनुसार यह व्रत इस प्रकार करना चाहिए —

पूर्व तैयारी

- व्रत से एक दिन पहले सात्विक भोजन करें।
- व्रत के दिन प्रातःकाल स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
- सोलह श्रृंगार करें।

पूजन सामग्री

- रेत या मिट्टी से बना शिवलिंग और पार्वती की प्रतिमा
- बेलपत्र, धतूरा, आक के फूल
- श्वेत वस्त्र, जनेऊ
- सुपारी, पान, नारियल
- धूप, दीप, कपूर
- फल, मिठाई, नैवेद्य

पूजन विधि (Hartalika Teej Vrat Vidhi)

1. **प्रातःकाल** — स्नान करके व्रत का संकल्प लें।
2. **शुभ मुहूर्त में** — रेत या मिट्टी से शिवलिंग और माता पार्वती की प्रतिमा बनाएँ।
3. भगवान गणेश की पूजा से शुभारम्भ करें।
4. शिव-पार्वती का षोडशोपचार पूजन करें।
5. **संपूर्ण Hartalika Teej Vrat Katha** का पाठ करें।
6. रात्रि जागरण करें — भजन, कीर्तन और स्तुति से रात्रि व्यतीत करें।
7. **प्रातःकाल** — पूजन सामग्री को नदी या तालाब में विसर्जित करें।
8. सखी या सहेली के साथ व्रत का **पारणा** करें।

🔔 **महत्वपूर्ण:** यह व्रत **निर्जला** (बिना जल के) रखा जाता है। व्रत का पारणा अगले दिन प्रातःकाल किया जाता है।

शिव-पार्वती की आरती | Aarti for Hartalika Teej

Hartalika Teej की पूजा के समय भगवान शिव और माता पार्वती की आरती गाना अत्यंत शुभ माना जाता है। पूजन के अंत में यह आरती अवश्य गाएँ —

जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्धांगी धारा॥